आधुनिक हिन्दी कविता का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

डा. पवन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
हिन्दू कन्या महाविद्यालय, धारीवाल, पंजाब।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जब जब राष्ट्र की अस्मिता पर बादल मडराएं है तब - तब साहित्यकारों ने अपनी कलम से नागरिकों को उनके कर्तव्य और सोई हुई ताकत को जाग्रत किया है। जैसा कि आप जानते है कि भारत विदेशी ताकतों के अधीन लम्बे समय तक रहा। आरम्भ में ये लोग व्यापार हेतु भारत आये बाद में अपने उपनिवेश स्थापित कर भारत को अपने अधीन कर लिया। 1857 से सीधा ईंग्लैण्ड से भारत का शासन चलने लगा। इस लम्बे समय में भारत की जनता के द्वारा अपनी अस्मिता अपनी संस्कृति सभ्यता एवं परम्परा को बचाने के लिए एक ही मार्ग था भारत को विदेशी ताकतों अंग्रेजी शासन से आजाद करवाकर अपनी स्वशासन व्यवस्था लागू करना।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन द्धारा राजनीतिक चेतना को अधुनातन अर्थ प्राप्त हुआ। उसके मूल में इण्डियन नैशनल कांग्रेस की सक्रिय भूमिका रही। यद्यपि इसी समय ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि ने भी इस स्वाधीनता आन्दोलन को सक्रियता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही साहित्यकारों ने जिन्दगी के अनदेखे पक्षों को अभिव्यक्त करते हुए अपनी सामाजिक प्रासंगिकता एवं प्रतिबद्धता को नए स्वरों में संचरित किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य में राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्ति देने वालों में भारतेन्दु हरिश्चद्र, मैथिली शरण गुप्त, बाल मुकुन्द गुप्त, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी माखन लाल चतुर्वेदी आदि ने राष्ट्रीयता को जातीयता के संकुचित दायरे से ऊपर उठाकर सही दिशा दर्शायी। भारतीय धर्म और मूल्य पर आधारित उनकी विचार पद्धति की हमारी राष्ट्रीयता में सर्वस्वीकृत हुई। द्विवेदी युगीन साहित्यकारों ने गाँधीवादी राष्ट्रीयता को उचित अभिव्यक्ति दी। सियाराम शरण गुप्त सोहन लाल द्धिवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि का नाम अग्रण्य है।

इन कवियों ने स्वतन्त्रता से पूर्व की राष्ट्रीय चेतना की प्रेरणा भूमि, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय चेतना, स्वर्णिम अतीत का वर्णन, मातृभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम, वर्तमान दुर्दशा का वर्णन, तत्कालीन घटनाओं का चित्रण, नूतन जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा, नवोतर दायित्वों के सवहन की प्रेरणा, जागरण गीत, वीर पूजा, सांस्कृतिक चेतना का स्फुरण, समकालीन तथ्यों के समन्वय द्धारा सांस्कृतिक चेतना का स्फुरण, मानवता वादी दृष्टिकोण, नैतिक दृढता की प्रतिष्ठा, समभाव की प्रतिष्ठा आदि का मर्मस्पशी चित्रण किया है।

अंग्रेजों ने अपनी कुटनीति के द्धारा भारत के जन जीवन को असहाय और कमजोर कर दिया था। उनके द्धारा दी गयी नवीन शिक्षा ने सामाजिक जीवन को अधिक दूषित कर दिया था। उनकी यह शिक्षा नीति भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के पूर्णतः विपरीत थी। औघोगिकरण और आर्थिक विपतियों के कारण श्रमिक वर्ग की व्यवस्था भी शोचनीय हो रही थी। हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता एवं मानवतावादी प्रवृत्रियों का बीजारोपण भारतेन्दू युग में भारतेन्दू हरिश्चन्द्र की कविताओं में आरम्भ हुआ। हा. हा. भारत दुर्दशा देखी न जाई। अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी पै धन विदेश चली जात इ है बात अतिख्वारी।

निज भाषा उन्न्ति अहे सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल। [1]

श्रीधर पाठक मातृभूमि के स्वर्णिम अतीत की बन्दना करते हुए आजादी की कामना करते हुए लिखते हैं -

जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द
जय जयति जयति प्राचीन हिन्द [2]

प्रताप नारायण मिश्र ने तृप्यंताम कविता में बड़ी चिन्ताकर्षक शैली द्धारा देश की महंगाई अकाल और हीनावस्था का चित्र प्रस्तुत किया है –

महंगी और टिक्स के मारे हमहि वसधा पीड़ित तन छाम
लाग पात लो मिलेन जिय भर ले तो वृथा दूध को नाम
तुमाहे कहा प्यावै, जब हमारे करत रहत गोवंश तमाम
के बल समुखि अथक उपमा लाहि मांग देवता तृप्यताम [3]

द्विवेदी जी के युग के कवियों ने विदेशी सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित भारतीयों के हीनता बोध को दूर करने का प्रयास किया। भारतीयों में सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करने के लिए कवियों ने निजी भाषा के अतिरिक्त संस्कृति के मूल स्रोत वेद तथा वेद-विघा के उपदेश को उचित-उपाय समझते हुए गुप्त जी लिखते हैं –

उस वेद के उपदेश का सर्वत्र ही प्रस्ताव हो
सौदाई और मतैव्य हो, अविरूद्ध मन का भाव हो
सब ईष्ट फल पावें परस्पर प्रेम रखकर सर्वथा
निज यश-भाग समानता से देवे लेते है यथा। [4]

माखन लाल चतुर्वेदी अंग्रेजी शासन की काली करतूतों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं –

काली तू रजनी की काली
शासन की करनी भी काली। [5]

पुष्प की अभिलाषा कविता में चतुर्वेदी जी ने पुष्प के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को स्पष्ट किया है।

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
भाव नहीं प्रेमी माला में विध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के शव पर वारि डाला जाऊं
चाह नहीं देवो के सिर पर चढूँ भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंके
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावे वीर अनेक [6]

मातृभूमि की आजादी के लिए गांधी जी द्वारा चलाए गये सत्याग्रह आन्दोलन व अहिंसक क्रांति के लिए आशा प्रकट करते हुए चतुर्वेदी जी लिखते है -

हूँ राष्ट्रीय सभा का सैनिक
उसकी ध्वनि पर मर मिटने में
छोटा सा अनुगामी हूँ
खुद अपना स्वामी हूँ ।
7

आजादी के लिए संघर्ष करते हुए सत्यग्रहियों के बंदी जीवन को स्पष्ट करते हुए नवीन जी लिखते हैं –

तेरी चक्की के ये गेहूं पिसते हैं पिस जाने दो।
चक्की पिसवाने वालों को मिट्टी में मिल जाने दो। 8

अन्यत्र नवीन जी लिखते हैं –

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ / जिससे उथल पुथल मच जाये
एक हिलौर इधर से आए / एक हिलौर उधर से आए
प्राणों के लाले पड़ जाए / त्राहि त्राहि रव मन में छाए
बरसे आग, जलद जल जाए / भस्मसात मधुर हो जाए। 9

रामधारी सिंह दिनकर ओज और वीर रस के राष्ट्रीय कवि हैं। भारत को अंग्रेजों की अधीनता से छुटकारा पाने के लिए हुंकार में लिखते है –

नहीं जीते जी सकता देख / विश्व में झुक तुम्हारा भाल
वेदना-मधु का भी कर पान / आज उगलूंगा गरल कराल। 10

एक अन्य स्थान पर दिनकर लिखते है –

कह दे शंकर से , आज करें
वे प्रलय - नित्य फिर एक बार
सारे भारत में गूंज उठे,
हो हर-हर बम का फिर महोच्चार
ले अंगड़ाई उठ हिले धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलिराट हुंकार भरे
फट जाय कुहा, भागे प्रमाद। 11

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रवादी कवयित्री हैं। वे झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की वीरता का गुणगान करते हुए लिखती हैं –

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी
यह मेरा बलिदान जगा देगा स्वतन्त्रता अविनाशी

होने चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चोह फांसी
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलो से चाहे झांसी। [12]

राणा प्रताप कविता के माध्यम से सोहन लाल द्विवेदी लिखते हैं –

जागो प्रताप, मेवाड़ देश के / लक्ष्य भेद है जगा रहे
जागो प्रताप मतवालों के / मतवाले सेना बजा रहे
जागो प्रताप हल्दी घाटी में / वैरी भैरी बजा रहे। [13]

पराधीनता के प्रतिशोध को व्यक्त करते हुए सोहन लाल द्विवेदी जी लिखते हैं –

जब सारी दुनिया सोती थी / तुमने ही तो इसे जगाया
दिव्य ज्ञान के दीप जलाकर / तुमने ही तो उसे भगाया।
तुमने वेद उपनिषद रखकर / जग-जीवन का मर्म बताया
ज्ञान शक्ति है ज्ञान मुक्ति है / तुमने ही तो गाना सुनाया। [14]

विदेशी भाषा का बहिष्कार करते हुए द्विवेदी जी लिखते है –

आग लगा दो ऐसे काले / कृत्रिम कुटिल विधान में
राज विदेशी भाषा का / अब रहे न हिन्दुस्तान में। [15]

आम जनमानस अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा पाना चाहता था। एक और अनेक राजनैतिक, सामाजिक संस्थाएं, आर्य समाज, ब्रझ समाज, कांग्रेस पार्टी आदि आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे वही दूसरी ओर इस युग के कवि भी अपनी कविता के माध्यम से आम जन में आजादी के लिए बलवती भावना को उनके प्राचीन इतिहास से अवबोध करवाते हुए उनमें आजादी की भावना की प्रेरणा फूंक रहे थे। केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए

हम कौन थे क्या हो गये क्या होंगे
आओ मिलकर विचारे ये समस्याएँ सभी (मैथिली शरण गुप्त)

अतः आधुनिक काल के हिन्दी के पुरोधा कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से सोई हुई भारतीय जनता को जगाया तथा उनमें चेतना और स्वतन्त्रता की नवीन आधारशिला प्रदान की। इस पुकार में हिन्दी कवियों की भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सन्दर्भ

1. काव्य कुसुम – सम्पादित सुधा जितेन्द्र पृ027 से उद्रत

2. हिन्द वन्दना – श्रीधर पाठक – पृ02

3. तृप्यताम – प्रताप नारथण मिश्रा – पृ016

4. भारत-भारती-मैथिली शरण गुप्त – पृ-182

5. हिमकिरीटनी – माखनलाल चतुर्वेदी पृ018

6. त्रिधारा – माखन लाल चतुर्वेदी – पृ015

7. हिमकीरिटनी – माखनलाल चतुर्वेदी – पृ025

8. कुँकुम – बाल कृष्ण शर्मा नवीन – पृ02

9. कुँकम - बाल कृष्ण शर्मा नवीन – पृ02

10. हुँकार - दिनकर पृ2

11. हुँकार – दिनकर पृ04

12. मुकुल – सुमझो कुमारी चौहान पृ75

13. प्रभाती – सोहनलाल द्रिवेदी – पृ04

14. भैरवी – सोहनलाल द्रिवेदी पृ 110

15. मुक्तिगंधा – सोहनलाल द्रिवेदी – पृ018